सामाजिक समूह

***डॉ0 सत्या मिश्रा**

Herry M. Jhonson ने अपनी पुस्तक Sociology: A Systemic Introduction में सामाजिक समूहों को समाजशास्त्र की विषयवस्तु मानते हुए इसे सामाजिक समूहों का अध्ययन करने वाल विज्ञान माना है। उनके अनुसार - सामाजिक समूह, सामाजिक अंतर्क्रियाओं की प्रणाली है जिसमें उनके सदस्यों के मध्य कुछ लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु आंशिक सहकार निहित रहता है। समान लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु व्यक्तियों का एकत्रीकरण, जिसमें दीर्घकालीन पारस्परिकता एवं अंतर्क्रिया निहित हो समूह कहलाता है।

TB. Bottomore ने अपनी कृति Sociology: A guide to problems and literature में सामाजिक समूह को व्यक्तियों का ऐसा संग्रह माना है, जिसकी दो विशेषताएं हैं-

प्रथम, प्रतिमानित संबध अर्थात संरचना या संगठन तथा द्वितीय, अन्य सदस्यों व प्रतीकों के मध्य सामूहिक चेतना या जागरूकता | सरंचना एवं संगठन की दृष्टि से समूह कुछ नियमों व अनुष्ठानों पर आश्रित होता है तथा मनोवैज्ञानिक आधार पर सदस्यों में चेतना पायी जाती है। इस संदर्भ में बॉटोमोर के अनुसार- परिवार, गाँव, राष्ट्र, ट्रेड यूनियन, राजनीतिक दल समाजिक समूह के उदाहरण हैं।

एसोशिएट प्रोफेसर,

समाज शास्त्र विभाग,

नारी शिक्षा निकेतन पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ।

MacIver & Page की Society नामक पुस्तक के अनुसार- समूह से तात्पर्य मनुष्यों के ऐसे एकत्रीकरण से है, जो समाजिक संबन्धों के लिए निकट आया है।

सामाजिक समूह से भिन्न Ginsberg ने अर्द्ध-समूह की अवधारण प्रतिपादित की है। अर्द्धसमूह व्यक्तियों का ऐसा एकीकरण है, जिनमें सरंचना या संगठन का अभाव पाया जाता है, तथा सदस्य प्रायः एक-दूसरे से अनभिज्ञ रहते हैं। सामाजिक वर्ग, प्रस्थिति समूह, आयु एवं लिंग समूह, भीड़ आदि अर्द्ध समूह के उदाहरण हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से समूह का अनेक प्रकारों में वर्गीकरण किया गया है, यथा – जैमिनशॉफ्ट तथा जैसलशॉफ्ट, प्राथमिक व द्वितीयक समूह, अन्तः समूह एवं वाह्य समूह, संदर्भ समूह, डॉयड, माण्ड तथा ट्रॉयड, सकारात्मक एवं नकारात्मक समूह आदि।

प्राथमिक समूह

सी0एच0 कूले ने अपनी पुस्तक Social Organization (1909) तथा Human Nature and Social Order नामक पुस्तक में प्राथमिक समूह की व्याख्या की है। उनके अनुसार- प्राथमिक समूह के निर्माण की तीन दशायें है- शारीरिक समीपता (सदस्यों के मध्य), समूह का लघु आकार तथा सापेक्षतः सम्बन्धों की स्थायी प्रकृति।

Bottomore ने Sociology: A guide to problems and literature नामक रचना में कूले के प्राथमिक समूह की व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया है कि, प्राथमिक समूह की विशेषता आमने-सामने के सम्बंध तथा सहयोग की भावना है। इनके सदस्यों के मध्य घनिष्ठता तथा 'हम' की भावना पायी जाती है। प्राथमिक समूहों का नियमन प्रायः प्रथा, रूढ़ि, परंपरा तथा जनरीतीयों के माध्यम से होता है।

MacIver & Page ने Society नामक पुस्तक में प्राथमिक समूह को समाजिक सरंचना की केंद्रीय इकाई मानते हुए उसकी निम्नांकित विशेषताएं चिन्हित की हैं-

1) सदस्यता का सीमित आकार।

2) सदस्यों में व्यक्तिगत संपर्क।

3) औपचारिक मान्यता का परिमाण।

4) अनुसरित हित का प्रारूप।

परिवार , क्रीड़ा समूह, मित्रमण्डली, पड़ोस, गाँव, अध्ययन दल, वार्तालाप मण्डली, स्थानीय भ्रातृत्व, वंशीय परिषद आदि प्राथमिक समूह के प्रमुख उदाहरण हैं। कूले ने इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे समूहों की चर्चा भी की है जो अर्द्ध-प्राथमिक समूह हैं जैसे- गाँव, स्काउट आदि।

प्राथमिक समूह समाज एवं व्यक्ति की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जिसमें व्यक्ति का समाजीकरण निहित है। कूले के अनुसार- प्राथमिक समूह समाज के सदस्यों का पालना है, जिसमें सामूहिक विशेषताएँ विकसित होती हैं, यह नियंत्रण का प्रमुख साधन है। यदि प्राथमिक समूह का प्रभाव घट जाता है व अन्यों का बढ़ जाता है, तो यह एक प्रकार का औपचारिकतावाद (Formalism) है जिससे लोग विचलित होते हैं एवं विचलित व्यवहार करते हैं। प्राथमिक समूह के माध्यम से समाजिक संबंधों की प्रकृति एवं लघु समूहों में पाये जाने वाले संबंधों की व्याख्या की जाती है।

द्वितीयक समूह

T.B. Bottomore के अनुसार- Cooley ने अपनी कृति में प्राथमिक एवं अन्य समूह का उल्लेख किया है तथापि उन्होंने अन्य समूहों को द्वितीयक समूह नहीं कहा है। द्वितीयक समूह की अवधारणा Kingsley Davis ने अपनी पुस्तक Human Society में प्रतिपादित की है। उनके अनुसार-प्राथमिक समूहों के विपरीत द्वितीयक समूह में सदस्यों के मध्य अवैयक्तिक संबध, औपचारिक तथा अप्रत्यक्ष संबंध पाए जाते हैं। द्वितीयक समूह पारस्परिक हित एवं समूह के सदस्यों की उपयोगिता के आधार पर निर्मित होते हैं। ये वृहत् समूहों में पाये जाने वाले संबंधों के स्वरूपों की व्याख्या

करते हैं। रॉबर्ट बीरस्डीड ने उन सभी समूहों को द्वितीयक कहा है जो प्राथमिक नहीं हैं।

Maclver & Page ने Society नामक पुस्तक में द्वितीयक समूह की चार विशेषताएं बतायी हैं- सदस्यता का सापेक्षतः असीमित आकार, औपचारिक सामाजिक संगठन, अवैयक्तिक संबध, अनुसरित हित का प्रारूप आदि।

मैकाइवर के अनुसार- राज्य, मंदिर, आर्थिक निगम, श्रमिक संघ, नगर, प्रदेश, राष्ट्र, राजनैतिक दल, चर्च आदि द्वितीयक समूह के उदाहरण हैं। द्वितीयक समूह उद्देश्य उन्मुखी होते हैं, जिसके सदस्य यद्यपि अपने हितों के प्रति जागरूक रहते हैं तथापि उनमें प्रत्यक्षतः वैयक्तिक संबधों के प्रति उदासीनता पायी जाती है। इसी कारण Paul Landis ने द्वितीयक समूहों को Cold World (शीत जगत) की संज्ञा दी है।

<u>संदर्भ ग्रन्थ सूची</u>

1- जॉनसन, हैरी एम0 (अनु0- योगेश अटल), 1999, सोशियोलॉजी, कल्याणी पब्लिशर्स, दिल्ली।

2- बॉटमोर, टी0वी0, (अनु0- गोपाल प्रधान), 2004, सोशियोलॉजीः अ गाइड टू प्रॉब्लम्स एण्ड लिट्रेचर, ग्रंथशिल्पी, दिल्ली।

3- मैकाइवर एवं पेज, (अनु0 - जी0 विश्वेश्वरैय्या एवं रामपाल सिंह गौड़), 2004, सोसायटी, रवि ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स प्रा0लि0, आगरा।

4- डेविस, किंग्सले, 1981, ह्यूमन सोसायटी, सुरजीत पब्लिकेशंस, दिल्ली।